Regarding inclusion of Kumbh Mela sites in the list of UNESCO World Heritage sites-laid

श्री प्रवीण पटेल **(फूलपुर) :** आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का पर्व है कुंभ । ज्ञान चेतना और उसका परस्पर मंथन कुंभ मेले का वो आयाम है जो आदि काल से ही हिंदू धर्मावलंबियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमंत्रण के खींचकर ले आता है और यही कारण रहा कि 144 वर्ष बाद घटित महाकुंभ, 2025 में दुनियाभर के 80 देशों से प्रतिनिधि और लगभग 1,50,00,000 विदेशी नागरिक शामिल हुए जो एक रिकॉर्ड था । श्रद्धालुओं की संख्या 65,00,00,000 से अधिक रही, जो अमेरिका, रूस, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, ब्राज़ील और बांग्लादेश जैसे देशों की कुल जनसंख्या से भी अधिक है । 105 देशों के मीडिया जर्नलिस्ट प्रयागराज पहुंचे और महाकुंभ का ग्लोबल लाइव टेलीकास्ट किया गया । दुनिया के किसी भी स्थान पर इतने लंबे समय तक चलने वाले विशालकाय महा आयोजन को सफल कर पाना कोई छोटी बात नहीं है । इसके लिए प्रशासनिक शक्ति और दृढ़ निश्चय नेतृत्व होने की आवश्यकता है ।

माननीय प्रधानमंत्री जी के कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन ने उत्तर प्रदेश की सरकार में सुरक्षा एवं व्यवस्था को लेकर अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं जो निश्चित तौर पर वंदनीय है । इसके अलावा जैसा कि हमारे माननीय रेल मंत्री जी ने इस सदन को सूचित किया है कि लगभग 17,000 नई ट्रेनों का परिचालन इस महाकुंभ में श्रद्धालुओं के आवागमन के लिए किया गया, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। कुंभ पर्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह पर्व प्रकृति और जीव तत्वों में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है । दुनिया के सबसे बड़े सामंजस्यपूर्ण सम्मेलन के रूप में कुंभ मेला उदारता और धैर्य जैसे मूल्यों का प्रतीक है जो आधुनिक मानवता के लिए बहुत फायदेमंद है । इसके अलावा कुंभ मेले की अवधारणा वर्तमान अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार उपकरणों के साथ अच्छी तरह से मेल खाती है, क्योंकि यह त्यौहार बिना किसी भेदभाव के दुनिया के सभी कोनों से लोगों का स्वागत करता है । कुंभ मेला न केवल एक धार्मिक आयोजन है बल्कि अब भारतीय सभ्यता संस्कृति का जीवन प्रकृति प्रतीक भी है जिसे यूनेस्को जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन के अंतर्गत यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स में शामिल होने के लिए वैश्विक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक रूप से महत्वपूर्ण है ।